प्रातः क्लास 14/9/68 ओमशान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओमशान्ति। ओमशान्ति का अर्थ तो बच्चों को अच्छी रीति मालूम है। मैं आत्मा, यह शरीर मेरा। यह अच्छी रीति याद करो। भगवान माना आत्माओं का बाप हमको पढ़ाते हैं। कब सुना होगा? वह तो समझते हैं कृष्ण पढ़ाते हैं; परन्तु उनका तो नाम–रूप है ना। यह तो पढ़ाने वाला है निराकार बाप। आत्मा सुनती है और परमपिता–परमात्मा सुनाते हैं। यह नई बात है ना। गायन भी है विनाश तो होने का ही है। एक हैं विनाशकाले विपरीत बुद्धि, दूसरे हैं विनाशकाले प्रीत बुद्धि। आगे तुम भी कहते थे ईश्वर सर्वव्यापी है। पत्थर–भित्तर में है। इन सभी बातों को अच्छी रीति समझना है। यह तो समझाया है आत्मा अविनाशी है। शरीर विनाशी है। आत्मा कब घिसती बढ़ती नहीं है। वह है ही इतनी छोटी आत्मा। इतनी छोटी आत्मा ही 84 जन्म लेकर सारा पार्ट बजाती है। आत्मा शरीर को चलाती है। यह समझने की बात है ना। ऊँच ते ऊँच बाप पढ़ाते हैं तो जरूर मर्तबा भी ऊँच मिलेगा ना। आत्मा ही पढ़कर मर्तबा पाती है। आत्मा कोई देखी नहीं जाती। बहुत कोशिश करते हैं देखने, आत्मा कैसे आती है, कहाँ से निकलती है; परन्तु मालूम नहीं पड़ता है। करके कोई देखे भी तो भी कुछ समझ नहीं सकेंगे। यह तो तुम समझते हो आत्मा ही शरीर में निवास करती है। आत्मा अलग है जीव अलग है। आत्मा छोटी–बड़ी नहीं होती है। जीव(शरीर) छोटा से बड़ा होता है। आत्मा ही पतित और पावन बनती है। आत्मा ही बाप को बुलाती है हे पतित आत्माओं को पावन बनाने वाले बाबा आओ। यह भी समझाया है सभी हैं सीताएँ ब्राइड्स और वह है राम ब्राइडग्रुम। वह लोग फिर सभी को ब्राइडग्रुम कह देते। अभी ब्राइडग्रुम सभी में प्रवेश करे यह तो हो नहीं सकता। यह उल्टा ज्ञान बुद्धि में होने के कारण ही नीचे गिरते आये हैं; क्योंकि बहुत ग्लानि करते, पाप करते, डिफेम करते, बाप की बहुत बड़ी निन्दा करते हैं। सो भी बेहद के बाप के। बच्चे कब बाप की ग्लानि करेंगे क्या? परन्तु आजकल बिगरते हैं तो बाप को भी गाली देने लगते हैं। यह तो है बेहद का बाप। आत्मा ही बेहद के बाप की ग्लानि करती है। बाबा आप कच्छ–मच्छ अवतार हो, कच्छ के बच्चे हो, मच्छ के बच्चे हो, रूहानी बाप को गाली देने लग पड़ते। इसको कहा जाता है ग्लानि। भारत में ही ऐसी ग्लानि करते हैं। और कहाँ भी कोई ऐसी ग्लानि नहीं करते। कृष्ण के लिए कितनी ग्लानि की है, रानियों को भगाया यह किया। मक्खन चुराते थे। अभी मक्खन आदि चुराने को उनको क्या दरकार रखी है। कितने तमोप्रधान बुद्धि बन पड़े हैं। बाप कहते हैं मैं आकर तुमको पावन बनाने की बहुत सहज युक्ति बताता हूँ। बाप ही पतित–पावन सर्वशक्तिवान अथॉरिटी है। जैसे– साधु–सन्त आदि जो भी हैं उनको शास्त्रों की अथॉरिटी कहा जाता है। कितना अहंकार रहता है जो फिर बैठकर शास्त्रावाद करते हैं। खास बनारस में जाकर शास्त्र–वाद करते हैं संस्कृत में। एक कहेंगे इनका अर्थ यह है दूसरा कहेंगे इनका यह अर्थ नहीं यह है। होशियार होते हैं ना। फिर उन्हों को मान देने लिए हरेक को 21 रुपया देते हैं। कितना भभका होता है। 5/7 मोटरें रहती हैं, सिपाही पहरे वाले रहते हैं, खजाना भी हाथ में होता है, सारी पलटन निकलती है। शिवाचार्य का तो कोई भभका वा पलटन आदि नहीं है। यह तो सभी वेदों–शास्त्रों आदि का सार बैठ बताते हैं। अगर शिवबाबा भभका दिखावे तो पहले इनका भी भभका चाहिए; परन्तु नहीं। बाप कहते हैं मैं तो तुम बच्चों का सर्वेन्ट हूँ। बाप इनमें प्रवेश कर बच्चों को समझाते हैं बच्चे तुम पतित बने हो। तुम पावन थे फिर 84 जन्मों बाद पतित बने हो। यह पतित दुनिया है ना। सतयुग को पावन दुनिया कहा जाता है। यह (ल0ना0) सतयुग में राज्य करते थे। अभी पतित बन गये हैं। इनकी ही हिस्ट्री–जॉग्राफी फिर से रिपीट होगी। इन्होंने ही 84 जन्म भोगे हैं। फिर इनको ही सतोप्रधान बनने की युक्ति बताता हूँ। बाप ही सर्वशक्तिवान, अथॉरिटी है। ब्रह्मा द्वारा सभी वेदों–शास्त्रों का सार बैठ समझाते हैं। चित्रों में ब्रह्मा को शास्त्र दिखाते हैं; परन्तु वास्तव में शास्त्रों की बात है नहीं। न बाबा के पास शास्त्र हैं, न इनके पास। तुम्हारे पास भी शास्त्र नहीं हैं। यह तो तुमको नित्य नई2 बातें सुनाते हैं। यह तो जानते हो कि सभी भक्तिमार्ग के शास्त्र हैं। मैं कोई शास्त्र थोड़े ही सुनाता हूँ। मैं तो तुमको मुख

से सुनाता हूँ। तुमको राजयोग सिखाता हूँ। जिसका फिर बाद में भक्तिमार्ग में नाम गीता रख दिया है। मेरे पा... वा तुम्हारे पास कोई गीता आदि है क्या। यह तो पढ़ाई है, पढ़ाई में अध्याय वा श्लोक आदि थोड़े ही होती है। मैं तुम बच्चों को पढ़ाता हूँ। हूबहू कल्प–कल्प ऐसे ही पढ़ाता रहूँगा। कितनी सहज बात समझाता हूँ। अपन को आत्मा समझो। यह शरीर तो मिट्टी हो जाता है। (होलिका का मिसाल) तो यह भी आत्मा अविनाशी है शरीर तो घड़ी–2 जलता रहता है। आत्मा एक शरीर छोड़ दूसरा लेती है। बाप कहते हैं मैं एक ही बार आता हूँ। मानते भी हैं शिवरात्रि। वास्तव में होना चाहिए शिवजयन्ती; परन्तु जयन्ती कहने से जन्म हो जाता है माता के गर्भ से। इसलिए शिवरात्रि कहा जाता है। शिवबाबा कहते हैं मैं रात्रि को ही आता हूँ। बाबा आपकी कौन सी रात्रि है? द्वापर और कलियुग की रात्रि। मेरे को ढूढ़ते, दरदर धक्के खाते रहते हैं। मैं कोई ठिक्कर–भित्तर में बैठा थोड़े ही हूँ जो मुझे ढूढ़ते हैं। कहते हो सर्वव्यापी है। तो तेरे में भी है ना। फिर धक्के क्यों खाते हो? एकदम जैसे जंगली बन जाते हैं। देवताओं से आसुरी सम्प्रदाय बन जाते हैं। देवताएँ कब शराब पीते हैं क्या? वही आत्माएँ फिर गिरी हैं। तो शराब आदि पीने लग पड़ी हैं। अब बाप समझाते हैं पुरानी दुनिया का विनाश भी जरूर होना है। पुरानी दुनिया में हैं अनेक धर्म। नई दुनिया में है एक धर्म। एक से अनेक धर्म हुए हैं। फिर एक जरूर होना है। मनुष्य तो कह देते कलियुग में अजन 40 हजार वर्ष पड़े हैं। जिसको कहा जाता है घोर–अंधियारा। ज्ञान सूर्य प्रगटा अज्ञान अंधेर विनाश। मनुष्यों में बहुत अज्ञान है। बाप ज्ञान सूर्य, ज्ञान सागर आता है तो तुम्हारा भक्तिमार्ग का ज्ञान मिट जाता है। तुम बाप को याद करते–2 पवित्र बन जाते हो। खाद निकल जाती है। यह है योगाग्नि। कामाग्नि काला बना देती है। योग–अग्नि अर्थात् शिवबाबा की याद गोरा बना देती है। कृष्ण का नाम रखा है ना श्याम–सुन्दर; परन्तु अर्थ थोड़े ही समझते हैं। बाप आकर अर्थ समझाते हैं। पहले–2 सतयुग में कितने सुन्दर थे।तो शरीर भी पवित्र सुन्दर लेते हैं। वहाँ कितना धन–दौलत सभी कुछ नया होता है। नई धरती सो पुरानी होती है। अभी इस पुरानी दुनिया का विनाश तो जरूर होना ही है। खूब तैयारियाँ हो रही है। भारतवासी इतने नहीं समझते हैं जितना वह समझते हैं हम अपने ही कुल का विनाश कर रहे हैं। कोई प्रेरक है। साइंस द्वारा हम अपना ही विनाश लाते हैं। यह भी समझते हैं क्राइस्ट से 3000 वर्ष पहले पैराडाइज़ था। इन गॉड–गॉडेस का राज्य था। भारत की(ही) प्राचीन है ना। अभी यह ल0ना0 ऐसे बने थे इस राजयोग से। यह राजयोग फिर बाप ही सिखला सकते हैं। सन्यासी सिखला न सके। आजकल कितनी ठगी निकल पड़ी है। महऋषि आदि बाहर में जाकर कहते हैं भारत का प्राचीन योग हम सिखलाते हैं। और फिर कहते अण्डे खाओ, शराब पीओ, कुछ भी करो। अभी वह कैसे राजयोग सिखला सकेंगे। मनुष्य को देवता कैसे बनावेंगे। बहुत ठगी करते हैं। तो फिर जन्म भी बहुत गंदा होता है। सन्यासियों में भी बहुत बीमार आदि होते हैं। जैसे कि मैड चैप्स बन जाते हैं। मनुष्य समझते हैं। यह सातवीं भूमिका में है। इनकी कोई हर्ष–शोक नहीं। इसको कहा जाता है अन्धश्रद्धा। बाबा का देखा हुआ है। बड़ा ही वन्डर खाते थे। मैड चैप्स को भी कह देते यह भगवान है। सभी ईश्वर हैं। आत्मा कितनी मैड चैप्स बन जाती है। अपन को खुद ही गाली देते रहते हैं। 84 लाख जन्मों से भी पूरा नहीं पड़ती तो फिर ठिक्कर–भित्तर में, कण–2 में कह देते। कितनी गाली देते हैं। इसलिए बाप ने समझाया है यह बड़ी हिरण्यकश्यिप हैं। जो कहते हैं हम भगवान हैं। हमारी पूजा करो। प्रहलाद की कथा है ना। तो बाप समझाते हैं आत्मा कितनी ऊँच है। फिर पुनर्जन्म लेते–2 तमोप्रधान बन जाती है। अभी फिर तुम स्वर्ग की स्थापना कर रहे हो। वहाँ दूसरा कोई धर्म होता ही नहीं है। अब बाप कहते हैं नर्क का विनाश तो जरूर होना है। यहाँ तक जो आये हैं वह फिर स्वर्ग में जरूर जावेंगे। शिवबाबा का थोड़ा भी ज्ञान सुना तो स्वर्ग में जावेंगे जरूर। फिर जितना पढ़ेंगे, बाप को याद करेंगे, उतना ऊँच पद पावेंगे। अभी विनाशकाल तो सभी के लिए है। विनाशकाले प्रीत बुद्धि जो हैं सिवाय एक बाप के और कोई को याद नहीं करते हैं। वही ऊँच पद पा सकते हैं। इसको कहा जाता है बेहद की स्कॉलरशिप। इसमें तो रेस करनी चाहिए। यह है ईश्वरीय लॉटरी।

एक तो है याद दूसरा दैवीगुण धारण करनी है। और राजा–रानी बनना है तो प्रजा भी बनानी है। कोई बहुत प्रजा बनाते हैं, कोई कम प्रजा बनाते हैं। प्रजा बनावेंगे सर्विस से। म्युजियम, प्रदर्शनी आदि से ढेर प्रजा बनती है। इस समय तुम पढ़ रहे हो फिर सूर्यवंशी–चन्द्रवंशी डिनायस्टी में चले जावेंगे। यह है तुम ब्राह्मणों का कुल। बाप ब्राह्मण कुल बनाते हैं। एडॉप्ट कर उन्हों को पढ़ाते हैं। बाप कहते हैं मैं एक कुल और दो डिनायस्टी सूर्यवंशी–चन्द्रवंशी बनाता हूँ। सूर्यवंशी महारा(जा)–महारानी। चन्द्रवंशी राजा–रानी। उन्हों को कहेंगे डबल सिरताज। लाइट का ताज भी है तो वह ताज भी है। फिर बाद में जब विकारी राजाएँ होते हैं तो उनको लाइट का ताज नहीं होता है। उन डबल सिरताज वालों के मंदिर में जाकर उनको पूजते हैं। अपवित्र पवित्र के आगे जाकर माथा टेकते हैं। (कुमारी का मिसाल) पतित मनुष्य, पावन के आ(गे) सिर झुकाते हैं। सतयुग में यह बातें होती नहीं। वह है ही पावन दुनियाँ। वहाँ पतित होते ही नहीं। उनको कहा जाता है सुखधाम। वायसलेस वर्ल्ड। इनको कहा जाता है विषियस वर्ल्ड। एक भी पावन नहीं। ऊँच–नीच मनुष्य तो होते ही हैं। सन्यासी घर–बार छोड़ भागते हैं। स्त्री को विधवा बनाकर जाते हैं। बच्चों को ऑरफन बना देते। यह भी पाप का काम किया ना। राजा गोपीचन्द का भी मिसाल है ना। राजा जाकर सन्यासी बना तो रानी विधवा बनी ना। अभी ऐसे विधवाओं का सन्यासी आकर गुरु बनते हैं। जो अपने हमजिन्स को विधवा बना देते उनको फिर अपना गुरु बना देते। उनकी पूजा करते हैं। दूध में पांव धोकर, चूम कर वह पानी आदि अमृत समझकर पीती हैं। कितनी मूर्खता है। इन सन्यासियों को तो वास्तव में घर में आना न है। उनका मान कितना रखते हैं। काम सभी उल्टा करते हैं। एक तरफ घर–बार छोड़ते हैं ईश्वर को पाने लिए। दूसरी तरफ फिर ईश्वर को गाली देते कि सर्वव्यापी है। अरे, तब तुम योग किससे लगाते हो? कहेंगे, ब्रह्म से। क्या ब्रह्म तत्व सर्वव्यापी है? हाँ। बाप कहते हैं यह उन्हों का भ्रम है। वापस तो कोई जा न सके। कोई भी मनुष्य एक/दो को सद्गति दे न सके। सर्व का सद्गति दाता मैं ही हूँ। मैं आकर सभी को पावन बनाता हूँ। एक तो पवित्र बन शान्तिधाम चले जावेंगे। और दूसरे पवित्र बन सुखधाम चले जावेंगे। यह है ही अपवित्र दुनिया। दुखधाम। सतयुग में बीमारी आदि कुछ भी नहीं होती। तुम उस सुखधाम के मालिक थे। फिर रावण राज्य में दुखधाम के मालिक बने हो। बाप कहते हैं तुम कल्प–2 मेरी श्रीमत .... स्वर्ग स्थापन करते हो। नई दुनिया का राज्य लेते हो। फिर पतित नर्कवासी बनते हो। देवताएँ ही फिर विकारी बन जाते हैं। वाममार्ग में गिरते हैं। तो मीठे–2 बच्चों को आकर बाप ने परिचय दिया है– मैं एक ही बार पुरुषोत्तम संगमयुग पर आता हूँ। मैं युगे–2 तो आता नहीं हूँ। कल्प के संगम युगे–2 आता हूँ। न कि युगे–2। कल्प के संगम पर क्यों आता हूँ? क्योंकि हेल हो हेविन, नर्क को स्वर्ग बनाता हूँ। हर 5000 वर्ष बाद आता हूँ। कई बच्चे लिखते हैं हमको वह खुशी नहीं रहती, हुलास नहीं रहता। अरे, बाप तुमको विश्व का मालिक बनाते हैं ऐसे बाप को याद कर तुमको खुशी नहीं होती। तुम पूरा याद नहीं करते हो तब खुशी नहीं ठहरती। पति को याद करते खुशी होती है, जो गटर में डालते हैं। और बाप जो डबल सिरताज बनाते हैं उनको याद कर तुमको खुशी नहीं होती। बाप के बच्चे बने फिर कहते हो खुशी नहीं। तो याद नहीं करते हो। पूरा ज्ञान बुद्धि में न है। याद न करते हैं इसलिए माया धोखा देती है। बच्चों को कितना अच्छी रीत समझते हैं। कल्प–2 समझाते हैं। आत्माएँ जो पत्थर बुद्धि बन पड़ी हैं उनको पारस बुद्धि बनाना है। नॉलेजफुल बाप ही आकर नॉलेज देते हैं। वह हर बात में फुल है। ज्ञान का सागर, सुख का सागर, प्यार का सागर है ना। ऐसे बाप से तुमको यह वरसा मिलता है। ऐसा बनने लिए ही तुम आते हो। बाकी वह सतसंग आदि तो सभी हैं भक्तिमार्ग के। उनमें एमऑबजेक्ट कुछ है नहीं। इसको तो गीतापाठशाला कहा जाता है। वेद पाठशाला नहीं होती। गीता से ही नर से नारायण बनते हो जरूर बाप ही बनावेंगे ना। मनुष्य मनुष्य को देवता बना न सके। बाप बार–बार बच्चों को समझाते हैं तुम अपन को आत्मा समझो। तुम कोई देहधारी थोड़े ही हो। आत्मा कहती है मैं एक देह छोड़ दूसरा लेता हूँ। अच्छा मीठे–2 बच्चों को रूहानी बाप दादा का यादप्यार गुडमॉर्निंग और नमस्ते।